بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡدِ
لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ مُحَمَّدٌ رَّسُوۡلُ اللّٰہِ
دفتر مجلس انصاراللہ بھارت
Office Of The Majlis Ansarullah Bharat
Mohallah Ahmadiyya Qadian-143516, Distt.Gurdaspur (Punjab) INDIA

सारांश ख़ुतबा जुमः सय्यदना अमीरुल मोमिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह अलख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ बयान फ़र्मूदा 29 नवम्बर 2024, स्थान मस्जिद मुबारक, इस्लामाबाद, यू.के.

सुलह-ए-हुदैबियः के परिपेक्ष में सीरत-ए-नबवी सलल्लाहु अलैहि वसल्लम का बयान।

Mob: 9682536974 E.mail. ansarullah@qadian.in Khulasa khutba- 29.11.24

محلہ احمدیہ قادیان-پنجاب-143516

أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيْكَ لَهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُوْلُهُ

امّا بعد فاعوذ باللہ من الشیطٰن الرجیم۔ بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

اَلۡحَمۡدُ لِلّٰہِ رَبِّ الۡعَالَمِیۡنَ ۔ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ ۔ مٰلِکِ یَوۡمِ الدِّیۡنِ ۔ اِیَّاکَ نَعۡبُدُ وَ اِیَّاکَ نَسۡتَعِیۡنُ ۔ اِہۡدِنَا الصِّرَاطَ الۡمُسۡتَقِیۡمَ ۔ صِرَاطَ الَّذِیۡنَ أَنۡعَمۡتَ عَلَیۡہِمۡ غَیۡرِ الۡمَغۡضُوۡبِ عَلَیۡہِمۡ وَلَا الضَّآلِّیۡنَ ۔

तशहहुद तअव्वुज़ तथा सूरः फ़ातिहा की तिलावत के बाद हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनसरिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया कि सुलह-ए-हुदैबियः (मुसलमानों और काफ़िरों के बीच होने वाला शांति समझौता जिसको क़ुरआन ने मोमिनों की विजय फ़रमाया) का वर्णन हो रहा था। उसको और अधिक विस्तार पूर्वक बयान करूंगा। उस अवसर पर सहाबा रज़ी. की पहरे पर ड्यूटी लगाई गई थी, उसके बारे में वर्णन मिलता है कि रसूलुल्लाह सलल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपने सहाबा रज़ी. को रात के समय पहरे का आदेश दिया हुआ था, प्रतिदिन तीन आदमी बारी बारी पहरा दिया करते थे।

यह भी वर्णन मिलता है कि मुसलमानों में से कुछ लोग रसूलुल्लाह सलल्लाहु अलैहि वसल्लम की आज्ञा से मक्का में दाख़िल हुए थे। ये हज़रत उस्मान की शरण लेकर मक्का में दाख़िल हुए थे और यह भी कहा जाता है कि छुप कर दाख़िल हुए थे। जब इन मुसलमानों की ख़बर क़ुरैश को हुई तो उनको पकड़ लिया गया, तथा क़ुरैश को अपने साथियों के पकड़े जाने की सूचना भी मिल गई थी, जिनको हज़रत मुहम्मद बिन सलमा रज़ी. ने रोक लिया था, तो क़ुरैश के एक अन्य हथियार बंद दल ने मुसलमानों पर हमला कर दिया। वे तीर और पत्थर फेंकने लगे। मुशरिकों के बारह घुड़ सवारों को मुसलमानों ने पकड़ लिया और मुसलमानों में से हज़रत इब्ने ज़ुनैम शहीद हो गए। क़ुरैश ने उनको तीर मार कर हत्या कर दी थी।

फिर क़ुरैश ने एक दल आँहज़रत स. के पास भेजा, जिनमें सुहैल बिन अमरु भी था। आँहज़रत स. ने जैसे ही दूर से उसको आते देखा तो सहाबियों से फ़रमाया कि सुहैल के माध्यम से तुम्हारा मामला सरल हो गया। उसने रसूलुल्लाह स. के पास पहुँच कर कहा कि आप स. के साथियों अर्थात हज़रत उसमान रज़ी. तथा दूसरे दस सहाबी रज़ी. को बन्दी बनाने और हमारे कुछ लोगों को आप स. से मुक़ाबला करने का जो मामला है, इसमें हमारा कोई विवेकशील आदमी शामिल नहीं है। हमें जब इस बात का पता चला तो हमें अत्यंत बुरा लगा, हमें इस बारे में कुछ ख़बर नहीं है। यह हम में से आवारा लोगों का काम था इस लिए हमारे जो आदमी आप स. ने दो बार पकड़े हैं, उन्हें हमारे पास वापस भेज दें। आप स. ने फ़रमाया कि मैं उनको उस समय तक नहीं भेजूंगा जब तक तुम मेरे साथियों को नहीं छोड़ोगे। इस पर उन सब लोगों ने कहा कि अच्छा हम उन्हें छोड़ देते हैं जिस पर क़ुरैश ने हज़रत उसमान रज़ी. और शेष दस सहाबियों को वापस भेज दिया। उस समय आँहज़रत स. ने भी उनके दस आदमियों को छोड़ दिया।

जैसा कि वर्णन हुआ है हज़रत उस्मान रज़ी. को काफ़िरों ने पकड़ लिया था और जब यह ख़बर आँहज़रत स. को पहुँची तो आप स. ने सहाबा रज़ी. से बैअत "एहद" ली थी, जिसे बैअत-ए-रिज़वान कहते हैं। जब क़ुरैश को हुदैबिया की इस बैअत का हाल पता लगा तो वे लोग अति भयभीत हुए तथा उनके विवेकशील लोगों ने मशवरा दिया कि सुलह करना उचित होगा, अर्थात इस प्रकार सुलह की जाए, यह कहा जाए कि इस साल आप वापस लौट जाएँ तथा अगले साल आकर तीन दिन मक्का में ठहर सकते हैं। किन्तु आप स. के साथ केवल एक सवार के साथ जो हथियार होते हैं, वे ही हों, अर्थात मियानों में पड़ी हुई तलवारें और कमानें हों।

सुलह-ए-हुदैबियः के बारे में हज़रत साहिबज़ादा मिर्ज़ा बशीर अहमद रज़ी. ने इस तरह लिखा है कि सुहैल आया और आते ही आँहज़रत स. से कहने लगा कि आओ जी, अब लम्बा विवाद छोड़ो, हम समझौते के लिए तय्यार हैं। आँहज़रत स. ने फ़रमाया- हम भी तय्यार हैं, और इस वक्तव्य के साथ ही आप स. ने अपने सैकरेट्री हज़रत अली रज़ी. को बुलवाया और चूंकि समझोते की शर्तों पर पर्याप्त वार्ता पहले हो चुकी थी और अन्य विस्तार ने साथ साथ तय होना था, इस लिए लिखने वाले के आते ही आप स. ने फ़रमाया कि लिखो! और बिस्मिल्लाह हिर्रहमान निर्रहीम से शुरू किया। सुहैल सुलह के लिए तो तय्यार था परन्तु क़ुरैश के अधिकारों की रक्षा तथा मक्का वालों की मर्यादा के लिए भी अत्यंत सावधान रहना था। उसने अरब की प्रथा के अनुसार बिइस्मिका अल्लाहुम्मा लिखने का आग्रह किया। दूसरी ओर मुसलमानों के लिए भी क़ौमी मर्यादा एवं धार्मिक सम्मान का सवाल था। वे भी इस बदली हुई लेखन शैली पर तुरन्त सावधान हो गए और कहने लगे कि हम तो अवश्य بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ही लिखेंगे। परन्तु आँहज़रत स. ने यह कहकर मुसलमानों को चुप करा दिया कि नहीं, इसमें कोई कठिनाई नहीं, जिस तरह सुहैल कहता है उसी तरह लिख लो। उसके बाद आप स. ने फ़रमाया- लिखो कि यह समझौता है जो मुहम्मद रसूलुल्लाह (सलल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने किया है। सुहैल ने फिर टोका कि यह "रसूलुल्लाह" का शब्द हम नहीं लिखने देंगे। आँहज़रत स. ने फ़रमाया कि आप लोग मानें या न मानें, मैं ख़ुदा का रसूल तो

हूँ, किन्तु चूंकि मैं मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह भी हूँ इस लिए चलो यूं ही सही। यहाँ पर आप स. के समझौता लेखक हज़रत अली रज़ी. के स्वाभिमान का भी वर्णन हुआ है कि आप रज़ी. ने आँहज़रत सलल्लाहु अलैहि वसल्लम के नाम के आगे से रसूलुल्लाह के शब्द को मिटाना पसंद न किया और फिर ख़ुद हुज़ूरे अकरम सलल्लाहु अलैहि वसल्लम ने यह शब्द समझौते में से काट दिया।

इस अवसर पर हज़रत उमर रज़ी. के भी जोश एवं उत्साह का भी वर्णन मिलता है। हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ी. ने भी इस घटना को हज़रत अबू बकर रज़ी. के गुण के रूप में इस प्रकार बयान किया है कि एक बार रसूल-ए-करीम स. ने सहाबा रज़ी. को संबोधित करते हुए फ़रमाया कि मैंने तुमको अनेक आदेश दिए, किन्तु मैंने तुममें से सर्वाधिक निष्ठ लोगों में भी कई बार विरोध की आत्मा देखी, परन्तु अबू बकर के अन्दर मैंने यह आत्मा नहीं देखी।

सुलह के समझौते के प्रपत्र के बारे में हज़रत साहिबज़ादा मिर्ज़ा बशीर अहमद रज़ी. लिखते हैं कि इस प्रकार अति कांट छांट के बाद यह समझौता पूरा हुआ और लगभग हरएक बात में आँहज़रत स. ने अपनी बात को छोड़ कर क़ुरैश की ज़िद को मान लिया और ख़ुदा की इच्छा के अंतर्गत अपने इस सम्झौते को पूरी वफ़ादारी के साथ पूरा किया। इस अनुबन्ध की दो प्रतियाँ बनाई गईं तथा गवाह के रूप में दोनों पक्षों के अनेक प्रतिष्ठित लोगों ने उन पर अपने हस्ताक्षर किए। समझौते की प्रक्रिया पूरी होने के बाद सुहैल बिन अमरु उस सन्धि पत्र की एक प्रति लेकर मक्का की ओर वापस लौट गया और दूसरी प्रति आँहज़रत स. के पास रही।

सहाबा की व्याकुलता का भी वर्णन मिलता है। जब आप स. इस समझौते को पूरा फ़रमा चुके तो रसूलुल्लाह स. ने अपने सहाबियों से फ़रमाया कि उठो! अपने ऊंटों को ज़िबह करो फिर सर मुंडवाओ। तो उनमें से एक भी खड़ा न हुआ, यहाँ तक कि आप स. यही बात तीन बार कही। आँहज़रत स. को इस बात पर दुःख हुआ और आप स. चुप चाप अपने विश्राम कक्ष तम्बू में तशरीफ़ ले गए। तम्बू में आप स. की पवित्र पत्नी हज़रत उम्मे सलमा रज़ीअल्लाहु अनहा, जो एक अत्यंत बहादुर महिला थीं, यह दृश्य देख रही थीं। उन्होंने अपने प्रिय एवं महान पति को चिन्ता जनक स्थिति में भीतर आते हुए देखा और आप स. के मुंह से, आप स. की चिन्ता एवं व्याकुलता के बारे में पूछा तो सहानुभूति और मुहब्बत भरी शैली में निवेदन किया कि या रसूलुल्लाह! आप स. दुखी न हों, आप स. के सहाबी रज़ी ख़ुदा की कृपा से अवज्ञाकारी नहीं हैं परन्तु इस सन्धि की शर्तों ने उन्हें निढाल कर दिया है, अतः मेरा सुझाव यह है कि आप स. उनसे कुछ न कहें बल्कि चुप चाप बाहर जाकर अपने क़ुरबानी के जानवर को ज़िबह फ़रमा दें और अपने सिर के बालों को मुंडवा दें, फिर आप स. सहाबा रज़ी. अपने आप आपका अनुसरण करेंगे। आँहज़रत स. को आपका सुझाव पसंद आया और आप स. ने उसके अनुसार ही किया।

रिवायत है कि रसूलुल्लाह स. हुदैबियः में उन्नीस दिन तक रुके और कहा जाता है कि बीस रातें व्यतीत कीं। जब आप स. वापसी की यात्रा में उस्फ़ान नामक स्थान के निकट कुरा उल ग़मीम में पहुंचे और यह रात का समय था तो सहाबियों को जमा होने की घोषणा करवाई और फ़रमाया कि आज रात मुझ पर एक सूरत (सूरःअल-फ़तह) नाजिल हुई है जो मुझे दुनिया की सारी वस्तुओं

से अधिक प्रिय है। जब आप स. ये आयतें (सूरः फ़तह की दो से चार और अठाईसवीं आयत) सहाबियों रज़ी. को सुनाईं तो चूंकि कुछ सहाबियों के दिलों में अभी तक सुलह-ए-हुदैबियः की कटुता शेष थी, वे चकित हुए कि हम तो प्रत्यक्षतः असफल होकर वापस जा रहे हैं और ख़ुदा हमें विजय की मुबारकबाद दे रहा है, यहाँ तक कि कुछ आतुर सहाबियों ने इस प्रकार के शब्द भी कहे कि क्या यह विजय है कि हम अल्लाह के घर की परिक्रमा करने से वंचित होकर वापस जा रहे हैं? आँहज़रत स. तक यह बात पहुंची तो आप स. ने अत्यधिक अप्रसन्नता व्यक्त की और एक संक्षिप्त सम्बोधन में बड़े जोश के साथ फ़रमाया कि यह अत्यंत अशिष्ट आपत्ति है, क्यूंकि क़ुरैश जो हमारे विरुद्ध युद्ध के मैदान में उतरे हुए थे, उन्होंने ख़ुद जंग को छोड़ कर शांति का समझौता कर लिया तथा अगले साल हमारे लिए मक्का के द्वार खोल देने का वादा किया है और हम अमन एवं शांति के साथ मक्का वालों के उपद्रवों से सुरक्षित होकर और भविष्य में विजय की सुगंध लेते हुए वापस जा रहे हैं। अतः निःसन्देह यह एक महान विजय है। क्या तुम लोग उन दृश्यों को भूल गए हो कि ये क़ुरैश ओहद और अहज़ाब के युद्धों में किस प्रकार तुम्हारे विरुद्ध चढ़ाईयाँ कर करके आए थे और यह ज़मीन बावजूद अपने विस्तार के तुम पर तंग हो गई थी और तुम्हारी आँखें पथरा गईं थीं और कलेजे मुंह को आते थे, परन्तु आज यही क़ुरैश तुम्हारे साथ अमन एवं शांति का समझौता कर रहे हैं। सहाबियों ने निवेदन पूर्वक कहा या रसूलुल्लाह! हम समझ गए, हम समझ गए, जहाँ तक आप स. की नज़र पहुंची है, वहां तक हमारी नज़र नहीं पहुँचती।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम बयान फ़रमाते हैं कि हुदैबिया की घटना को ख़ुदा तआला ने फ़तह मुबीन का नाम दिया है और फ़रमाया है कि- إِنَّا فَتَحْنَا لَكَ فَتْحًا مُّبِينًا वह फ़तह अधिकांश सहाबियों पर भी गुप्त थी बल्कि कुछ पाखंडियों के इसलाम से पलट जाने का भी कारण बनी, किन्तु वास्तव में यह स्पष्ट विजय थी, यदपि इसमें छुपी हुई संभावनाएं गहराई से समझने वाली थीं।

अल्लामा बलाज़री रह. ने लिखा है कि सुलह के अनेक परिणाम और फल प्रकट हुए और अंततः मक्का पर विजय प्राप्त हुई, सारे मक्का वाले इस्लाम में दाख़िल हो गए, लोग झुण्ड के झुण्ड इसलाम में दाख़िल होने लगे। हज़रत मसीह मौऊद अलै. बयान फ़रमाते हैं कि सुलह-ए-हुदैबियः के मुबारक फलों में से एक यह भी है कि लोगों को आप स. के पास आने का अवसर मिला और उन्होंने आँहज़रत स. की बातें सुनीं तो उनमें सैंकड़ों मुसलमान हो गए। अंत में हुज़ूर अनवर ने इरशाद फ़रमाया कि इंशाल्लाह शेष आगे बयान होगा।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ نَحْمَدُهٗ وَنَسْتَعِيْنُهٗ وَنَسْتَغْفِرُهٗ وَنُؤْمِنُ بِهٖ وَنَتَوَكَّلُ عَلَيْهِ وَنَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ اَعْمَالِنَا مَنْ يَّهْدِهِ اللّٰهُ فَلَا مُضِلَّ لَهٗ وَمَنْ يُّضْلِلْهُ فَلَا هَادِيَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ. عِبَادَ اللّٰهِ رَحِمَكُمُ اللّٰهُ اِنَّ اللّٰهَ يَاْمُرُ بِالْعَدْلِ وَالْاِحْسَانِ وَاِيْتَآءِ ذِي الْقُرْبٰى وَيَنْهٰى عَنِ الْفَحْشَآءِ وَالْمُنْكَرِ وَالْبَغْيِ يَعِظُكُمْ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ فَاذْكُرُوا اللّٰهَ يَذْكُرْكُمْ وَادْعُوْهُ يَسْتَجِبْ لَكُمْ وَلَذِكْرُ اللّٰهِ اَكْبَرُ۔

हिन्दी अनुवाद को अधिक सुन्दर बनाने हेतु सुझाव का स्वागत है, सम्पर्क अनुवादक- 9781831652

टोल फ्री नम्बर अहमदिय्या मुस्लिम जमात, पंजाब- 18001032131